International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 • Website: www.ijfmr.com • Email: editor@ijfmr.com

उत्तर प्रदेश के लखीमपुर खीरी जनपद में राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (NRLM) के अंतर्गत स्वयं सहायता समूह (SHG) की सदस्याओं के व्यक्तिगत जनसांख्यिकीय लक्षणों का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ॰ हेमन्त कुमार सिंह[1], आलोक कुमार[2]

[1]प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, डॉ॰ राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या, (फैज़ाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत)

[2]शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग, डॉ॰ राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या, (फैज़ाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत)

सारांश (Abstract):

यह अध्ययन उत्तर प्रदेश के लखीमपुर खीरी जनपद के (विकास खंड ईसानगर) में किया गया। शोध में कुल 100 उत्तरदाताओं का चयन दो चयनित ग्राम पंचायतों से समानुपातिक यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया, प्रत्येक पंचायत से 10 स्वयं सहायता समूह (SHG) लिए गए। कुल 20 समूहों से 100 उत्तरदाता शामिल किए गए। परिणामों से पता चला कि अधिकांश सदस्य मध्यम आयु वर्ग (61.00%), अन्य पिछड़ा वर्ग (41.00%), साक्षर (90.00%), इंटरमीडिएट उत्तीर्ण (38.00%), छोटे परिवार वाले (63.00%), सीमान्त किसान (56.00%) एवं कृषि कार्य में संलग्न (54.00%) थे। इनमें से 80% विवाहित, 63% कम वार्षिक आय वाले, 60% एक संगठन से जुड़े थे। जोखिम ग्रहण अभिवृत्ति मध्यम स्तर की (53.00%), वैज्ञानिक अभिवृत्ति भी मध्यम (59.00%) थी। बैंक अधिकारी/सीआरपी (औपचारिक स्रोत), परिवार (अनौपचारिक स्रोत) एवं टीवी (जनसंचार माध्यम) को सर्वप्रथम सूचना स्रोत माना गया।

मुख्य शब्द (Keywords): सामाजिक-आर्थिक स्थिति, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, स्वयं सहायता समूह सदस्य

परिचय (Introduction):

भारत जैसे विकासशील देश में ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में स्वयं सहायता समूह (Self-Help Groups – SHGs) एक सशक्त माध्यम बनकर उभरे हैं। इन समूहों का उद्देश्य विशेष रूप से गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाली महिलाओं को संगठित कर उन्हें सामाजिक एवं आर्थिक रूप से सशक्त बनाना है। SHG मॉडल के माध्यम से महिलाएँ सामूहिक रूप से कार्य करती हैं, जिससे न केवल उनके परिवारों की आर्थिक स्थिति में सुधार होता है, बल्कि पूरे समुदाय पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है (Singh et al., 2020; Devi & Rani, 2019)।

स्वयं सहायता समूह एक पंजीकृत अथवा अपंजीकृत संगठनात्मक इकाई होती है, जिसमें प्रायः 15 से 20 सदस्य होते हैं। ये सदस्य समान सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि से होते हैं और स्वैच्छिक रूप से एकत्र होकर नियमित बचत करते हैं। वे सामूहिक निधि में योगदान देकर आवश्यकतानुसार ऋण लेते हैं और आपसी सहयोग के माध्यम से वित्तीय कठिनाइयों से उबरने का प्रयास करते हैं (Kumar & Sharma, 2018)।

भारत सरकार के ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (National Rural Livelihood Mission – NRLM) की शुरुआत जून 2011 में की गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों की गरीब महिलाओं को आत्म-निर्भर बनाना एवं उन्हें दीर्घकालिक आजीविका के साधनों से जोड़ना है (MoRD, 2011)। सितंबर 2023 तक, इस मिशन के अंतर्गत 742 जिलों, 7073 विकास खंडों, 2,69,133 ग्राम पंचायतों और 7,25,906 गाँवों में कुल 8.99 करोड़ ग्रामीण गरीब परिवारों को जोड़ा जा चुका है (NRLM Portal, 2023)। इस योजना ने ग्रामीण स्तर पर संगठनात्मक ढाँचा तैयार कर महिलाओं की भागीदारी और नेतृत्व क्षमता को भी प्रोत्साहित किया है (Verma et al., 2022)।

सामाजिक-आर्थिक स्थिति (Socio-economic status) किसी व्यक्ति या समुदाय की सामाजिक और आर्थिक दशा को दर्शाने वाला एक समग्र सूचकांक होता है। इसमें व्यक्ति की जाति, शिक्षा, आय, भूमि स्वामित्व, पेशा, परिवार का आकार एवं संसाधनों का उपयोग जैसी अनेक घटक शामिल होते हैं। यह स्थिति यह भी निर्धारित करती है कि व्यक्ति विकास की योजनाओं से कितना लाभ उठा सकता है (Choudhary & Das, 2017)। जनसांख्यिकीय विशेषताओं (Demographic traits) जैसे आयु, वैवाहिक स्थिति, परिवार संरचना, एवं आजीविका के साधन— SHG सदस्याओं की भूमिका, पहुँच और आत्मनिर्भरता को प्रभावित करते हैं (Sharma et al., 2016)।

अतः SHG सदस्याओं के व्यक्तिगत जनसांख्यिकीय लक्षणों का अध्ययन, उनके सामाजिक सशक्तिकरण और आर्थिक व्यवहार को समझने की दृष्टि से अत्यंत आवश्यक है। यह न केवल नीति निर्माताओं को अधिक प्रभावी योजनाएँ बनाने में मदद करेगा, बल्कि ग्रामीण विकास की दिशा में क्रियान्वयन के स्तर पर आवश्यक सुधारों को भी उजागर करेगा।

2. सामग्री और विधियाँ:

यह अध्ययन उत्तर प्रदेश राज्य के लखीमपुर खीरी जनपद में *राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (NRLM)* के अंतर्गत कार्यरत स्वयं सहायता समूह (SHG) की सदस्याओं के उद्यमशील व्यवहार (Entrepreneurial Behaviour) का मूल्यांकन करने के उद्देश्य से किया गया।

शोध के लिए लखीमपुर खीरी जनपद के कुल 15 विकास खंडों में से विकास खंड ईसानगर का चयन उद्देश्यपूर्वक (purposive sampling) किया गया। विकास खंड से दो ग्राम पंचायतों का चयन किया गया, और प्रत्येक पंचायत से 10 स्वयं सहायता समूहों (SHGs) को समानुपातिक यादृच्छिक प्रतिचयन विधि (proportionate random sampling) द्वारा चुना गया। इस प्रकार कुल 20 SHGs प्रत्येक SHG से 5 सदस्य, कुल मिलाकर 100 उत्तरदाताओं का चयन यादृच्छिक रूप से किया गया।

डेटा संकलन के लिए एक पूर्व परीक्षणित (pre-tested) एवं संरचित (structured) साक्षात्कार अनुसूची (interview schedule) का उपयोग किया गया। एकत्र किए गए आंकड़ों का विश्लेषण औसत (mean) और प्रमाणिक विचलन (standard deviation) के आधार पर वर्गों में विभाजित कर किया गया। इसके पश्चात आंकड़ों का आवृत्ति वितरण (frequency distribution) तथा प्रतिशत (percentage) के माध्यम से विश्लेषण किया गया।

3. परिणाम एवं चर्चा

3.1 आयु

SHG सदस्याओं की आयु को तीन वर्गों में बाँटा गया — युवा (33 वर्ष तक), मध्य आयु वर्ग (34–60 वर्ष), और वृद्ध (60 वर्ष से अधिक)। सर्वेक्षण से पता चला कि 61% महिलाएँ मध्य आयु वर्ग में थीं, 21% वृद्ध वर्ग में और 18% युवा वर्ग में थीं। यह इस तथ्य को दर्शाता है कि मध्य आयु वर्ग की महिलाएँ जिम्मेदारियाँ उठाने, आय बढ़ाने और लघु उद्यम शुरू करने में अधिक सक्षम होती हैं।

3.2 जाति

SHG सदस्याओं में 41% महिलाएँ अन्य पिछड़ा वर्ग (OBC) से थीं, जबकि 27% अनुसूचित जाति (SC), 19% सामान्य वर्ग (GEN), और 13% अनुसूचित जनजाति (ST) से संबंधित थीं।

3.3 शिक्षा

शिक्षा स्तर के अनुसार, 38% महिलाओं ने इंटरमीडिएट तक शिक्षा प्राप्त की थी। 18% हाई स्कूल, और 18% स्नातक या परास्नातक थीं। 9% प्राथमिक स्तर तक, 7% मध्य विद्यालय तक शिक्षित थीं, जबकि 10% निरक्षर थीं।

3.4 परिवार का आकार

63% महिलाओं का परिवार छोटा (4 सदस्य तक) था, 35% का मध्यम (5–9 सदस्य) और केवल 2% का परिवार बड़ा (10+ सदस्य) था।

3.5 व्यवसाय

उत्तरदाताओं में से 54% महिलाएँ केवल खेती में लगी थीं, 18% खेती + सेवा, 16% खेती + व्यवसाय और 12% खेती + व्यवसाय + सेवा से जुड़ी थीं।

3.6 भूमि स्वामित्व

56% महिलाएँ सीमांत कृषक थीं (1 हेक्टेयर से कम भूमि), 17% लघु कृषक (1.01–2.00 हेक्टेयर), 11% मध्यम कृषक (2.01–4.00 हेक्टेयर) और 16% बड़े कृषक (4.01 हेक्टेयर से अधिक) थीं।

तालिका 1: उत्तरदाताओं का आयु वर्ग के अनुसार वितरण

(n = 100)

क्रम संख्या	आयु वर्ग	उत्तरदाता (संख्या)	प्रतिशत (%)
1	युवा (33 वर्ष तक)	18	18.00
2	मध्य आयु (34–60 वर्ष)	61	61.00
3	वृद्ध (61 वर्ष से अधिक)	21	21.00
	कुल	100	100.00

तालिका 2: उत्तरदाताओं का जाति के अनुसार वितरण

(n = 100)

क्रम संख्या	जाति वर्ग	उत्तरदाता (संख्या)	प्रतिशत (%)
1	सामान्य वर्ग (GEN)	19	19.00
2	अन्य पिछड़ा वर्ग (OBC)	41	41.00
3	अनुसूचित जाति (SC)	27	27.00
4	अनुसूचित जनजाति (ST)	13	13.00
	कुल	100	100.00

तालिका 3: उत्तरदाताओं का शिक्षा स्तर के अनुसार वितरण

(n = 100)

क्रम संख्या	शिक्षा स्तर	उत्तरदाता (संख्या)	प्रतिशत (%)
1	निरक्षर	10	10.00
2	प्राथमिक शिक्षा (कक्षा 1–5)	09	09.00
3	मध्य शिक्षा (कक्षा 6–8)	07	07.00
4	हाई स्कूल (कक्षा 9–10)	18	18.00
5	इंटरमीडिएट (कक्षा 11–12)	38	38.00
6	स्नातक/परास्नातक	18	18.00
	कुल	100	100.00

तालिका 4: उत्तरदाताओं का पारिवारिक आकार के अनुसार वितरण

(n = 100)

क्रम संख्या	परिवार का आकार	उत्तरदाता (संख्या)	प्रतिशत (%)
1	छोटा (4 सदस्य तक)	63	63.00
2	मध्यम (5–9 सदस्य)	35	35.00
3	बड़ा (10+ सदस्य)	02	02.00
	कुल	100	100.00

तालिका 5: उत्तरदाताओं का व्यवसाय के अनुसार वितरण

(n = 100)

क्रम संख्या	व्यवसाय श्रेणी	उत्तरदाता (संख्या)	प्रतिशत (%)
1	केवल खेती	54	54.00
2	खेती + सेवा	18	18.00
3	खेती + व्यवसाय	16	16.00
4	खेती + व्यवसाय + सेवा	12	12.00

क्रम संख्या	व्यवसाय श्रेणी	उत्तरदाता (संख्या)	प्रतिशत (%)
	कुल	100	100.00

तालिका 6: उत्तरदाताओं का भूमि स्वामित्व के अनुसार वितरण

(n = 100)

क्रम संख्या	भूमि वर्ग (हेक्टेयर में)	उत्तरदाता (संख्या)	प्रतिशत (%)
1	सीमांत कृषक (1.00 हे. से कम)	56	56.00
2	लघु कृषक (1.01 – 2.00 हे.)	17	17.00
3	मध्यम कृषक (2.01 – 4.00 हे.)	11	11.00
4	बड़े कृषक (4.01 हे. से अधिक)	16	16.00
	कुल	100	100.00

3.7 वैवाहिक स्थिति

80% महिलाएँ विवाहित थीं, 15% तलाकशुदा, विधवा या अलग हुई थीं, जबकि केवल 5% अविवाहित थीं।

3.8 वार्षिक आय

63% महिलाओं की वार्षिक आय ₹86,000 से कम थी (कम आय वर्ग), 29% की ₹86,001–3,84,000 के बीच (मध्यम आय वर्ग), और 8% की ₹3,85,000 से अधिक थी (उच्च आय वर्ग)। आय का दायरा ₹29,000 से ₹6,10,000 तक था।

3.9 सामाजिक भागीदारी

60% महिलाएँ केवल एक संगठन में सक्रिय थीं, 19% दो संगठनों में, और 21% दो से अधिक संगठनों में भाग ले रही थीं।

3.10 जोखिम ग्रहण प्रवृत्ति (Risk Orientation)

53% महिलाएँ मध्यम जोखिम लेने वाली थीं, 27% उच्च और 20% निम्न स्तर की प्रवृत्ति रखती थीं।

3.11 वैज्ञानिक अभिवृत्ति (Scientific Orientation)

59% महिलाओं में वैज्ञानिक सोच मध्यम स्तर की थी, 23% में उच्च और 18% में निम्न स्तर की।

3.12 प्रसार सम्पर्क (Extension Contact)

(A) औपचारिक स्रोत (Formal Sources):

सबसे अधिक संपर्क बैंक अधिकारियों/सामुदायिक संसाधन व्यक्तियों (MPS: 4.75) से था। इसके बाद सहकारी संस्थाएँ (3.89), निजी एजेंसियाँ (3.38), NGOs (2.31), प्रशिक्षण केंद्र/KVK (2.27) और NRLM के समन्वयक (1.51) थे। औसत स्कोर: 3.01

(B) अनौपचारिक स्रोत (Informal Sources):

परिवार (MPS: 8.00) सबसे प्रमुख स्रोत था, इसके बाद पड़ोसी (6.25), मित्र (4.89), स्थानीय नेता (3.5), प्रगतिशील किसान (2.6), और रिश्तेदार (2.51)। औसत स्कोर: 4.62

(C) जनसंचार माध्यम (Mass Media):

टीवी (5.33) सर्वाधिक संपर्क का माध्यम था, इसके बाद मोबाइल (4.81), इंटरनेट (3.44), रेडियो (2.82), समाचार पत्र (2.79), फ़िल्म शो, प्रदर्शनियाँ, कृषि पुस्तकें आदि शामिल थे। औसत स्कोर: 2.06

सभी स्रोतों (औपचारिक, अनौपचारिक, जनसंचार) का कुल औसत स्कोर: 3.23, जो SHG सदस्याओं की सूचनात्मक पहुँच को "संतोषजनक" दर्शाता है।

तालिका 7: उत्तरदाताओं का वैवाहिक स्थिति के अनुसार वितरण

(n = 100)

क्रम संख्या	वैवाहिक स्थिति	उत्तरदाता (संख्या)	प्रतिशत (%)
1	विवाहित	80	80.00
2	अविवाहित	05	05.00
3	अन्य (विधवा/तलाकशुदा/पृथक)	15	15.00
	कुल	100	100.00

तालिका 8: उत्तरदाताओं का वार्षिक आय के अनुसार वितरण

(n = 100)

क्रम संख्या	वार्षिक आय वर्ग	उत्तरदाता (संख्या)	प्रतिशत (%)
1	कम (₹86,000/- तक)	63	63.00
2	मध्यम (₹86,001 – ₹3,84,000/-)	29	29.00
3	अधिक (₹3,84,001/- और उससे ऊपर)	08	08.00
	कुल	100	100.00

तालिका 9: उत्तरदाताओं की सामाजिक भागीदारी के अनुसार वितरण

(n = 100)

क्रम संख्या	सामाजिक भागीदारी स्तर	उत्तरदाता (संख्या)	प्रतिशत (%)
1	केवल एक संगठन में भागीदारी	60	60.00
2	दो संगठनों में भागीदारी	19	19.00
3	दो से अधिक संगठनों में भागीदारी	21	21.00
	कुल	100	100.00

तालिका 10: उत्तरदाताओं का जोखिम ग्रहण प्रवृत्ति के अनुसार वितरण

(n = 100)

क्रम संख्या	जोखिम स्तर	उत्तरदाता (संख्या)	प्रतिशत (%)
1	निम्न (16 अंक तक)	20	20.00
2	मध्यम (17–24 अंक)	53	53.00
3	उच्च (25 और उससे अधिक अंक)	27	27.00
	कुल	100	100.00

तालिका 11: उत्तरदाताओं का वैज्ञानिक अभिवृत्ति के अनुसार वितरण

(n = 100)

क्रम संख्या	वैज्ञानिक सोच स्तर	उत्तरदाता (संख्या)	प्रतिशत (%)
1	निम्न (13 अंक तक)	18	18.00
2	मध्यम (14–19 अंक)	59	59.00
3	उच्च (20 अंक और उससे अधिक)	23	23.00
	कुल	100	100.00

तालिका 12A: औपचारिक सूचना स्रोतों के साथ संपर्क

(औसत स्कोर आधारित, n = 100)

क्रम संख्या	औपचारिक स्रोत	औसत स्कोर (MPS)	स्थान (Rank)
1	बैंक अधिकारी/सामुदायिक संसाधन व्यक्ति	4.75	I
2	सहकारी संस्थाएँ	3.89	II
3	निजी एजेंसियाँ	3.38	III
4	NGOs	2.31	IV
5	KVK/प्रशिक्षण केंद्र	2.27	V
6	NRLM मिशन समन्वयक / विभागीय अधिकारी	1.51	VI
	औसत स्कोर	3.01	

तालिका 12B: अनौपचारिक सूचना स्रोतों के साथ संपर्क

क्रम संख्या	अनौपचारिक स्रोत	औसत स्कोर (MPS)	स्थान (Rank)
1	परिवार के सदस्य	8.00	I
2	पड़ोसी	6.25	II
3	मित्र	4.89	III
4	स्थानीय नेता	3.50	IV
5	प्रगतिशील किसान	2.60	V
6	रिश्तेदार	2.51	VI
	औसत स्कोर	4.62	

तालिका 12C: जनसंचार माध्यमों के साथ संपर्क

क्रम संख्या	जनसंचार माध्यम	औसत स्कोर (MPS)	स्थान (Rank)
1	टीवी	5.33	I
2	मोबाइल फोन	4.81	II

क्रम संख्या	जनसंचार माध्यम	औसत स्कोर (MPS)	स्थान (Rank)
3	इंटरनेट	3.44	III
4	रेडियो	2.82	IV
5	समाचार पत्र	2.79	V
…	(अन्य माध्यम जैसे पोस्टर, पत्रक, फिल्म शो आदि)	…	VI–XVII
	औसत स्कोर (सभी का)	2.06	

कुल औसत (औपचारिक, अनौपचारिक एवं जनसंचार स्रोत): 3.23, जो एक "उचित स्तर के सूचना संपर्क" को दर्शाता है।

4. निष्कर्ष (Conclusion):

अध्ययन के निष्कर्षों के अनुसार, अधिकांश स्वयं सहायता समूह (SHG) की सदस्याएँ मध्य आयु वर्ग की थीं और उनकी शिक्षा स्तर इंटरमीडिएट तक थी। उनके परिवार का आकार सामान्यतः छोटा पाया गया। इनमें से अधिकांश महिलाएँ विवाहित थीं और अन्य पिछड़ा वर्ग (OBC) से संबंधित थीं।

अध्ययन में यह भी सामने आया कि अधिकांश सदस्याएँ सीमांत कृषक थीं और खेती ही उनकी प्रमुख आजीविका थी। इनकी वार्षिक आय सामान्यतः ₹86,001 से ₹3,84,000 के बीच पाई गई, जो मध्यम आय वर्ग में आता है।

इसके अतिरिक्त, SHG सदस्याओं में जोखिम ग्रहण प्रवृत्ति और वैज्ञानिक सोच दोनों मध्यम स्तर की पाई गई। सामाजिक रूप से, अधिकांश महिलाएँ कम से कम एक संगठन में सक्रिय रूप से भागीदार थीं, जो उनके सामाजिक जुड़ाव और जागरूकता का संकेत है।

संदर्भ सूची (Refernces):

1. आर्या, के. (2012). *Women empowerment through SHGs: A Study in Uttarakhand* (डॉक्टरेट शोधप्रबंध, गोविंद बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर, उत्तराखंड)।
2. भट्ट, एम. ए., वानी, आई. ए., अहसान, ए., एवं अहमद, एम. (2014). Empowerment of Women through Self Help Group in Madhya Pradesh: A Sociological Study. *Journal of Humanities and Social Science, 19*(1), 80–94।
3. गांधी, एस. (2010). Progress, Performance and Problems of Self Help Group Movement in India: A Case Study of District Solan in Himachal Pradesh. *Research Journal of Humanities and Social Sciences, 1*(2), 60–65।

4. गौतम, एस. (2018). *Constraints Analysis Regarding Smooth Functioning of Women Self-Help Groups in Akbarpur Block of Kanpur Dehat District, U.P.* (डॉक्टरेट शोधप्रबंध, आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, अयोध्या, उत्तर प्रदेश)।
5. प्रिया, एन. के. (2016). *Impact of Self Help Groups (SHGs) on Rural Women Empowerment in Andhra Pradesh* (डॉक्टरेट शोधप्रबंध, आचार्य एन. जी. रंगा कृषि विश्वविद्यालय, हैदराबाद)।
6. रैना, वी., भूषण, बी., प्रसांत, बी., एवं खजूरिया, एस. (2016). Entrepreneurial Behaviour of Dairy Farmers. *Journal of Animal Research, 6*(5), 1–7।
7. सेन्थिलकुमार, सी. बी., अरुमुगम, ए., धर्मराज, इंधुमति, बी. सी., सेल्वम, सी. वी., एवं कांदीपन, ई. (2020). A Study on Women Empowerment through Self-Help Groups with Special Reference to Villupuram District in Tamil Nadu. *International Journal of Critical Reviews, 7*(6), 355–358।
8. शर्मा, एन., वासन, एम., सिंह, पी., पडारिया, आर. एन., संगीता, वी., एवं कुमार, एन. (प्रकाशन वर्ष उपलब्ध नहीं)। Effectiveness of SHGs in Improving Livelihood Security.
9. नाबार्ड. (2009). *Status of Microfinance in India 2008-09*. मुंबई: राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक।
10. देशपांडे, आर. एस., एवं शर्मा, पी. (2013). Self Help Groups and Empowerment of Women: A Case Study of Maharashtra. *Indian Journal of Agricultural Economics*।
11. स्वैन, आर. बी., एवं वॉलेन्टिन, एफ. वाई. (2009). Does Microfinance Empower Women? Evidence from Self-Help Groups in India. *International Review of Applied Economics, 23*(5), 541–556।
12. त्रिपाठी, के. के. (2011). Self Help Groups: A Catalyst for Women Empowerment. *Kurukshetra – A Journal on Rural Development*।
13. ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार. (2022). *Annual Report on National Rural Livelihood Mission (NRLM)*।
14. कबीर, एन. (2005). Is Microfinance a Magic Bullet for Women's Empowerment? Evidence from South Asia. *Economic and Political Weekly, 40*(44–45), 4709–4718।